भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग

(भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी केंद्रीय औषधि प्रयोगशाला)

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

"भारत के संविधान में राजभाषा का स्थान एवं राजकीय कार्यालयों में राजभाषा का कार्यान्वयन"

दिनांक: 02 जनवरी 2023

हिंदी कार्यशालाप्रतिवेदन

भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोगद्वारा दिनांक 02 जनवरी 2023 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोगकेसभागार में किया गया। इस कार्यशाला में बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । विषय विशेषज्ञ के रुप में डॉ. उमेश कुमार शर्मा, हिंदी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय संगठन, कमला नेहरु नगर, गाज़ियाबाद एवं भूतपूर्व होम्योपैथिक भेषजसंहिताप्रयोगशाला के पूर्व निदेशक डॉ. डी. आर. लोहार को आमंत्रित किया गया था।

इस अवसर पर गणमान्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. पी. गर्ग, पूर्व मुख्य केमिस्ट,आयुष मंत्रालय; डॉ. राजीव कुमार शर्मा, पूर्व निदेशक, भूतपूर्वभारतीय चिकित्सा भेषजसहिंता प्रयोगशाला एवं भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग, गाज़ियाबाद;श्री सदगुरु प्रसाद यादव, पूर्व औषधि नियंत्रक, उत्तर प्रदेश सरकार; डॉ. जय प्रकाश, पूर्व निदेशक, भूतपूर्वभारतीय चिकित्सा भेषजसंहिता प्रयोगशाला; एवं डॉ. रविन्द्र सिंह,सहायक निदेशक (रसायन), केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, मंच पर उपस्थित रहे।

कार्यशाला में औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान, गाज़ियाबाद (केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्) एवं भारतीयभेषजसंहिता आयोग, गाज़ियाबाद (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय) के वरिष्ठ अधिकारीगण भी मौजूद होकर ज्ञान हिंदी पर ज्ञान अर्जन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं राष्ट्रगान के साथ हुआ। राजभाषा नामित हिंदी अधिकारी डॉ. अनुपम मौर्य ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया । सर्व प्रथम कार्यालय के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह ने सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया| निदेशक ने अपने स्वागत भाषण में समस्त गणमान्य अतिथियों का अभिवादन किया तथा संस्थान द्वारा हिन्दी के क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यों का व्योरा प्रस्तुत किया, उन्होने अपने अभिभाषण मे यह भी बताया की आगामी समय मे संस्थान हिन्दी में भी आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी तथा होम्योपैथिक औषधियों के मानक प्रकाशित करने का कार्य करेगा साथ साथ यह भी बताया की इन पद्धतियों के बारे अधिकतम जानकारी हिंदी में प्रकाशित हो जिससे की जन जन को इसकी जानकारी और लाभ प्राप्त हो ।

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार शर्मा ने "*भारत के संविधान में राजभाषा का स्थान एवं राजकीय कार्यालयों में राजभाषा का कार्यान्वयन*" विषय पर व्याख्यान दिया| उन्होने बताया कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर भी बल दिया। मुख्य विषय विशेषज्ञ ने बताया कि संविधान के भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक में राजभाषा संबंधी प्रावधान किये गए हैं। प्रत्येक अनुच्छेद के बारे में मुख्य वक्ता ने विस्तार से चर्चा की।

भूतपूर्व होम्योपैथिक भेषजसंहिता प्रयोगशाला के पूर्व निदेशक डॉ. डी. आर. लोहार. ने बताया कि संस्थान में जो भी तकनीकी कार्य हो रहे हैं उनको भी हिंदी भाषा में अनुवाद किया जाए एवं हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाए। साथ ही साथ उन्होंने संविधान में राजभाषा का स्थान एवं समय समय पर होने वाले संशोधनों पर विस्तार से जानकारी दी |

सभी विशिष्ट अतिथियों डॉ. जी. पी. गर्ग, राजीव कुमार शर्मा, सदगुरु प्रसाद यादव, डॉ. जय प्रकाश, डॉ. रविन्द्र सिंह,
ने अपने ज्ञान के अनुभवों को साझा किया एवं कार्यालय में कैसे हिंदी का प्रयोग दैनिक कार्यों में करें इस पर चर्चा की | सभी विशिष्ट अतिथियोंने भाषा के प्रचार, प्रसार, एवं महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये। विशिष्ट

अतिथियों ने निदेशक महोदय का धन्यवाद करते हुए राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन के प्रमुख बिन्दुओं पर चर्चा की।

अंत में निदेशक ने सभी विशिष्ट अतिथियों को तुलसी का पौधा उपहार में देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के समापन हेतु श्री दिव्य सौरभ कुशवाहा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए इस कार्यशाला को

सफल बनाने के लिए कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। उपरोक्त हिंदी कार्यशाला को विभिन्न समाचार पत्रों ने प्रमुखता से छापा है |

संस्थान के मानकों को हिंदी में करेंगे प्रकाशित : डॉ. रमन

माई सिटी रिपोर्टर

गाजियाबाद। भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक भेषज संहिता आयोग (पीसीआईएएच) ने अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि हम बदलेंगे तो युग बदलेगा, इसी सोच के साथ हमें ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। इसलिए हमने संस्थान के मानकों को हिंदी में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। अब से संस्थान के मानक हिंदी में भी प्रकाशित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग की अपेक्षा है कि कार्यक्रम के माध्यम से संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियमों और नियमों की जानकारी दी जाये। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य हिंदी के प्रति अधिकारियों और कर्मचारियों की झिझक को दूर करना है। मुख्य अतिथि केंद्रीय विद्यालय के हिंदी

राजभाषा के क्रियान्वयन विषय पर कार्यशाला के आयोजन में शामिल बुद्धिजीवी। संवाद

के अध्यापक उमेश कुमार शर्मा ने कहा कि हिंदी को सिर्फ राजभाषा के रूप में ही नही बल्कि भारत की आत्मा के रूप में देखना चाहिए। इस मौके पर डॉ. रविंद्र सिंह, डॉ. जय प्रकाश, पूर्व निदेशक डॉ. राजीव कुमार शर्मा, डॉ. डीआर लोहार ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यशाला का संचालन डॉ. अनुपम मौर्य ने किया और संयोजक दिव्य सौरभ कुशवाहा रहे।

'हिंदी भाषा नहीं, भारत की आत्मा है'

गाजियाबाद। भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग संस्थान में हिंदी कार्यशाला हुई। मुख्य अतिथि केंद्रीय विद्यालय के हिंदी के अध्यापक उमेश कुमार शर्मा ने कहा कि हिंदी को राजभाषा के रूप में ही नहीं बल्कि भारत की आत्मा के रूप में देखना चाहिए।

उन्होंने हिंदी के प्रयोग के प्रावधानों के साथ राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नीति और राजभाषा नियम 1976 के बारे में विस्तार से बताया। संस्थान के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह ने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य हिंदी के प्रति अधिकरियों-कर्मचारियों की झिझक को दूर करना रहा।

------x-------